कथक

'कथक' उत्तर प्रदेश का एक पारंपरिक नृत्य है।

'कथक' शब्द की उत्पत्ति 'कथा' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ एक 'कहानी' है।

'कथाकार' या कहानी सुनाने वाले वह लोग होते हैं, जो विभिन्न मुद्राओं और संगीत के माध्यम से महाकाव्यों की उप-कथाओं के विस्तृत आधार पर कहानियों का वर्णन करते हैं।

उद्भव

वैष्णव पंथ एवं **भक्ति आंदोलन** ने लयात्मक और संगीतात्मक रूपों के एक सम्पूर्ण नव प्रसार में सहयोग दिया।

मुगल काल में यह नृत्य शैली मंदिर नृत्य से दरबारी नृत्य के रूप में परिवर्तित हो गई।

इस नृत्य ने ईरानी वेशभूषा और नृत्य की शैलियों का अनुकरण करना प्रारंभ कर दिया।

मुख्य घटक

थाट में कोमल एवं विशिष्ट लयों का सम्मिलन होता है।

तालों को विभिन्न प्रकार के नामों से पुकारा जाता है, जैसे- तोड़ा, टुकड़ा और परन।

क्रमालय अंतिम भाग है, जिसमें जटिल रूप में तीव्रता के साथ पैरों द्वारा प्रदर्शन किया जाता है।

गत भाव- इसमें विभिन्न पौराणिक खंड बिना संगीत या गाने के प्रदर्शित किए जाते हैं।

नर्तक और तबला वादक के मध्य होने वाले प्रतिस्पर्धात्मक मुकाबले को 'जुगलबंदी' कहा जाता है।

समापन से पूर्व शुद्ध तालबद्ध गतिविधियों को 'तराना' कहा जाता है।

पढ़ंत में, जटिल बोल उच्चारित और प्रदर्शित किये जाते हैं।

प्रमुख विशेषताएं

कथक में ध्रुपद संगीत का गायन किया जाता है।

तराना, ठुमरी और गजलों की शुरुआत मुगलों ने की थी।

कथक के विकसित हुए विभिन्न घराने निम्नलिखित हैं:

लखनऊ

नवाब वाजिद अली शाह के अधीन यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। इस घराने के अंतर्गत मुख्य बल अभिव्यक्ति एवं अनुग्रह पर दिया गया था।

जयपुर

इसकी शुरूआत भानु जी द्वारा की गई थी। इसमें गति, प्रवाह और लम्बे लयबद्ध प्रारूपों को अधिक महत्व दिया जाता है।

बनारस

जानकी प्रसाद के नेतृत्व में इसका विकास हुआ। इस घराने में मंच क्रिया (फ्लोरवर्क) पर अधिक ध्यान दिया गया था। इसमें समाभिरूपता भी महत्वपूर्ण होती है।

प्रसिद्ध कलाकार

बिरजू महाराज

दमयंती जोशी

लच्छू महाराज

सितारा देवी

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION